ज़िन्दगी की मुस्कान

मनीषा श्री

ज़िन्दगी की गुल्लक

(किस्से कविताओं के)

ज़िन्दगी की गुल्लक

मनीषा श्री

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-878-9

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812 / 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com
website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 240.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2016 © मनीषा श्री

ZINDAGI KI GULLAK (Poetry and Stories)
by Manisha Sri

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

कविताओं में कहानी या कहानी में कविता

'ज़िन्दगी की गुल्लक' मेरी पहली किताब है या यह कह लीजिये कि मेरी पहली कोशिश अपनी भावनाओं को इस खूबसूरत दुनिया से मिलवाने की। मेरी किताब न ही कोई कविता संग्रह है और न ही कहानियों का पिटारा। यह तो मेरे अंदर की आवाज़ है जो मैंने अपनी डायरी में दबा रखी थी। मुझे अपनी बात को कविता का रूप देना बहुत पसंद है, मगर यह भी सच है कि कोई भी कविता बिना किसी कहानी के नहीं होती। जी हाँ हर कविता में एक कहानी छुपी होती है जो असल में जननी होती है उस कविता की। कवितायें यूँ ही नहीं रची जातीं, कुछ न कुछ ज़रूर घटता है उनके जन्म से पहले जो मजबूर कर देता है एक कवि को अपनी कलम में रफ्तार डालने के लिए।

जब भी मेरे आस-पास कुछ ऐसा हुआ जिसने मुझे रात को जगाया हो बस उस रात मैंने जो-जो लिखा वह सब आज आपके साथ इस किताब के माध्यम से साझा करने के कोशिश कर रही हूँ। इस किताब में लिखी हर कविता और उसके साथ जुड़ी कहानी न सिर्फ मेरे जीवन का स्वरूप है बल्कि हो सकता है आप भी इनको पढ़कर अपने जीवन के उन पलों को याद करें जो हवा के झोंके की तरह आपके जीवन में कब आये और कब चले गए आपको पता ही नहीं चला। एक औरत के जीवनकाल में बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जिन्हें न सिर्फ समाज बल्कि वह खुद उसे नज़रअंदाज़ कर देती है। और क्योंकि मैं भी इसी वर्ग का हिस्सा हूँ इसलिए यह करामात मैंने भी कई बार दोहराई है, बस फर्क यह रहा कि उसे अपनी डायरी में लिख कर भूल गयी।

इस किताब के ज़रिये मुझे बहुत से लोगों को शुक्रिया कहना है

मगर उससे पहले मैं वक़्त को थैंक्स बोलना चाहूँगी जिसने मुझे थोड़ा सुस्ताने का मौका दिया और उन तसल्ली भरे पलों में मैंने अपनी डायरी पर जमी धूल को साफ किया। एक और बात मैं अगर आज यह किताब लिख पा रही हूँ तो उसमें सबसे बड़ा योगदान है मेरे 6 साल के बेटे शौर्य का। जी हाँ, उसकी परवरिश के लिए लिये गये काम से मेरे अल्पविराम ने ही मुझे प्रेरणा दी कि मैं लिखूँ, वर्ना पिछले 11 सालों से तो बस मैंने रेस लगा रखी थी वक़्त के साथ। बैठने का समय तो जुगाड़ नहीं पा रही थी, तो खुद के अंदर झाँकने का कहाँ से लाती।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे हमेशा अच्छे दोस्तों का सहारा मिला और ऐसे ही कुछ दोस्त हैं जिन्होंने मुझे हर सफल मदद की ताकि मैं अपनी मन की बात को एक किताब का रूप दे सकूँ। मेरी सहेली रुचिका मेरी लिखी हर रचना को बड़े ही ध्यान से पढ़ती और अगर उसकी हामी मुझे मिल जाती तो बस समझ लीजिये कि हरी झंडी मिल गयी।

कभी-कभी आपको कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं जो आपको हिम्मत का वह टॉनिक देते हैं जिसके बिना जीना बहुत मुश्किल होता है। उन लोगों में मेरे अज़ीज़ दोस्तों की लिस्ट बहुत लम्बी है अगर सबके नाम लिखने लगी तो किताब उनके नामों से ही भर जायेगी और फिर भी सम्भावना है कि एक दो नाम छूट जायें।

माँ, पापा और मेरे भाई आशीष और भाभी का शुक्रिया क्योंकि आज मैं जो भी बन पायी हूँ या बनने की कोशिश में हूँ सब उनके ही आशीर्वाद और नि:स्वार्थ प्यार का नतीजा है। इस किताब में लिखे हर रिश्ते को परखने की समझ मुझे मेरे माता पिता से ही मिली है।

अब बारी है उस इंसान की जो सिर्फ मेरा जीवनसाथी ही नहीं बल्कि मेरे जीने का सहारा भी है, मेरा सबसे प्यारा दोस्त जिससे मैं सबसे ज़्यादा झगड़ती हूँ, लेकिन दूर नहीं रह सकती, वह है 'सर्वज्ञ'। उसके बिना लिखना तो दूर मेरा साँस लेना भी मुश्किल है।

आखिर में आप सभी पाठकों का शुक्रिया जो आपने मुझे इतनी इज़्ज़त दी। मेरे डायरी के पन्नों को समेट कर अपने घर ले आये। आशा

है कि यह किताब आपको पसंद आयेगी और मुझे और आगे भी लिखने का मनोबल मिलेगा।

मेरी लिखी गयी रचना, हो सकता है सबसे सुन्दर न हो मगर यह एक ईमानदार कोशिश है, इसलिए आपको जैसी भी लगें मेरी रचनाएँ, अपने विचार ज़रूर बताइयेगा, मैं इंतज़ार करूँगी।

आभार

मनीषा श्री
maniparashar21@gmail.com

अनुक्रम

1.	शब्द	11
2.	कदम ज़मीन पर रहें	15
3.	ज़िन्दगी	20
4.	दहेज	26
5.	बेटी की माँ	31
6.	माँ	35
7.	मेरे पापा	41
8.	टुकड़े	46
9.	माँ हूँ, भगवान नहीं	51
10.	वक्त	56
11.	असमंजस	60
12.	मैं चुप थी	65
13.	कोशिश	69
14.	सपने	73
15.	मेरी रफ्तार	78
16.	अंधविश्वास	82
17.	तेरी रुस्वाई	87
18.	बारिश की बूँदें	91
19.	नदी की कहानी	96
20.	मेरा कृष्ण कोई नहीं	102
21.	बस थोड़ा और	106

1. शब्द

आज के इस भाग-दौड़ से भरे माहौल में शायद हर कोई एक बनावटी ज़िंदगी जी रहा है। मन में कुछ और ज़ुबान पर कुछ और। ऐसा नहीं है कि हममें से कोई भी यह मुखौटा पहन कर खुश है पर हाँ एक अजीब-सा डर है कि कहीं मेरे मन की बात अगर दुनिया के सामने आ गयी तो क्या लोग समझेंगे या फिर मज़ाक में उड़ा देंगे। अब भावनाएँ चाहे छोटी हों या बड़ी, उनका कोई मोल नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि वो एक व्यक्ति विशेष के लिए अनमोल होती हैं। बहुत सहजता से रखी जाती हैं ये भावनाएँ शायद इसीलिए इसे निर्भय होकर सबके सामने रखने से पहले हम कई बार सोचते हैं, बिलकुल उसी तरह जैसे अपने किसी प्रिय के लिए बनाई गयी पहली चाय को परोसने से पहले हम न जाने कितनी बार उसे चखते हैं।

हम सब में एक कवि, एक लेखक छुपा बैठा है जो तभी जागता है जब कुछ घटता है- कुछ ऐसा जो आपको सोने नहीं देता और लगातार आप सोचते रहते हैं। ऐसे में कुछ लोग लिख कर अपनी बात कहते हैं और कुछ लोग खुद से ही बतिया लेते हैं। पर शब्द सबके पास होते हैं और भावनाएँ सबकी हिचकोले खाती हैं इस जीवन-सागर में।

ऐसा भी नहीं कि जब मन परेशान हो तभी हम अपनी रात काली करते हैं। कई बार ज़रूरत से ज़्यादा खुशी और किसी अपने से मिलने की बेचैनी भी हमें सूरज का इंतज़ार करने पर मजबूर कर देती है।

जब कोई अपना आपसे दूर हो जाए और आप समझ भी न पायें कि उसकी नाराज़गी किस बात पर है तो मन का भावुक होना बनता है। और अगर उस पल आपके आँसू आपकी पलकों को छोड़कर बाहर